Written by रामचंद्र गुहा
Saturday, 10 March 2018 10:45

: '□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□.. □□□□□ □□□□ □ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□.' : □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ : □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ :

□□□□□□□□□ □□□□□

□□ □□□□□□□□ :(क्षमा-याचना से चति्□त नर्मिल करने वाले इस आलेख का पहला हसि्□सा आप गतांक में पहले ही पढ़ चुके हैं□ अब इस आलेख का दूसरा और अंतमि हसि्□सा पढ़यि)

वीरेंदर सहवाग के प्रसंग ने मुझे □क पुरानी घटना याद दलिा दी□ उसमें □क सेलब्रिटी ने अपने राजनीतकि □जेंडे के लि□ आधा-अधूरा सच नहीं, बल्कि सरासर झूठ बोला था□ वह वाकया साल 2002 में गुजरात में हुई सांप्रदायकि हसिा के बाद हुआ था□ उस हसिा में हजारों मुस्लमिों के साथ पूर्व सांसद □हसान जाफरी भी मारे ग□ थे□ जब अहमदाबाद में उनके घर को हसिक भीड़ ने घेर लयिा था, तब उन्होंने वरष्ठि पुलसि अधकिारयिों और राजनेताओं को मदद के लि□ फोन कयिा□ मगर उन्हें सहायता नहीं मलिी और सोसायटी में रहने वाले अन्य तमाम लोगों के साथ वह भी भीड़ की भेंट चढ़ ग□□

दंगा थमने के बाद उपन्यासकार अरुंधत‍ि राय ने उन पर □क लेख लखिा□ उन्होंने लखिा था कि भीड़ ने सांसद को मारने से पहले 'उनकी बेटयिों को नर्विस्त्र कयिा और जिंदा जला दयिा'□

ये तथ्य बनिा पुष्ट कि□ लखिे ग□ थे, जसि पर सर्वप्रथम ऐतराज जाफरी के बेटे ने जताया□ उन्होंने लखिा, राय के लेख को पढ़ने के बाद □ ऐसा इसलि□, क्योंकि 'हम सभी भाई-बहनों में सरि्फ मैं भारत में रह रहा हूं.. मेरे भाई व बहन अमेरकिा में रहते हैं..'□

साल 2002 के फरवरी व मार्च में गुजरात में हु□ दंगे वाकई बहुत भयानक थे□ अंग्रेजी मीडयिा ने उसकी खूब (और संवेदनशीलता से) रपिोर्टगि की थी□ तब राज्य और केंद्र, दोनों जगह भाजपा की सरकारें थीं और वह रक्षात्मक मुद्रा में आ गई थी□ मगर राय की अपुष्ट लेखनी ने उसे जवाबी हमला करने का मौका दे दयिा□ पार्टी के नेता कहने लगे कि मीडयिा न□ तथ्यों को 'गढ़कर' सरि्फ हदिुओं को बदनाम करने में दलिचस्पी ले रहा है□ □क बड़े नेता ने तो यह भी कहा कि राष्ट्रवादी तत्वों को गलत रूप में चति्रति करने के लि□ लेखक कल्पनाशीलता का सहारा ले रहे हैं□

बहरहाल, लेख छपने के तीन हफ्ते के बाद अरुंधत‍ि राय ने माफी मांग ली□

सहवाग सौभाग्यशाली थे कि जब उन्होंने यह गंभीर गलती की, तो ट्वटिर जैसा मंच अस्तत्वि पा चुका था, इसीलि□ वह संभल सके□ मुझे उम्मीद है कि सहवाग प्रकरण पर वे तमाम अन्य सेलब्रिटी भी ध्यान देंगे, जन्होंने अपने क्षेत्र में मुकाम हासलि कर लयिा है और इतर वषियों पर टप्पिणी करने की

जाफरी-बेटियों को निर्वस्त्र कर फूंका गया, झूठ लिखा था अरूंधति ने

Written by रामचंद्र गुहा
Saturday, 10 March 2018 10:45

इच्छा रखते हैं। यदि वे तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं या नजरअंदाज करते हैं, फिर चाहे वह जान-बूझकर किया गया हो या अज्ञानता में, तो वे न सिर्फ अपनी छवि खराब करते हैं, बल्कि देश के नाजुक सामाजिक ताने-बाने को भी नुकसान पहुंचाते हैं।

यह तो सहवाग प्रकरण का पहला सबक है। दूसरा सबक यह कि अगर कोई आपकी गलती बताए, तो अच्छा यही है कि उसे सुधारें और माफी मांग लें। मुझे कुछ संतोष हुआ, जब सहवाग ने आंशिक माफी मांगी, पर खुशी तब मिली, जब दूसरे के दबाव में ही सही, उन्होंने उस ट्वीट को हटा लिया।

गलती करना इंसानी फितरत है, पर हमारे कुछ फिल्मी सितारों, क्रिकेटरों, वैज्ञानिकों, उद्यमियों और सबसे ऊपर राजनेताओं को यह लगता ही नहीं कि वे कभी गलती भी करते हैं। गलती बताने के बाद सहवाग ने जो किया, वह उन्हें याद रखना चाहिए। ऐसा करना उन्हें और मानवीय ही नहीं, अधिक से अधिक पसंदीदा भी बनाएगा। (समाप्त)

बहु-आयामी प्रतिभा के स्वामी रामचंद्र गुहा का नाम देश में चोटी के इतिहास-लेखकों में गिना जाता है।

2 / 2